सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्

स्तूपसंदर्शनपरिवर्तः

(глава 11, отрывок)

О царевне нагов, которая стала Буддой

अथ खलु तस्यां वेलायामधस्ताद्दिशः प्रभूतरत्नस्य तथागतस्य बुद्धक्षेत्रादागतः प्रज्ञाकूटो नाम बोधिसत्त्वः।

(buddha)-kṣetra *m* - поле Будды; вселенная или система миров, где обитает Будда;

kūṭa *m, n* - вершина; груда, куча; большое количество, множество;

स तं प्रभूतरत्नं तथागतमेतदवोचत्-गच्छामो भगवन् स्वकं बुद्धक्षेत्रम्।

अथ खलु भगवान् शाक्यमुनिस्तथागतः प्रज्ञाकूटं बोधिसत्त्वमेतदवोचत्-

मुहूर्तं तावत् कुलपुत्र आगमयस्व यावन्मदीयेन बोधिसत्त्वेन मञ्जुश्रिया कुमारभूतेन सार्धं कंचिदेव धर्मविनिश्चयं कृत्वा पश्चात् स्वकं बुद्धक्षेत्रं गमिष्यसि।

kumārabhūta (kumāra-bhūta) - остающийся молодым (постоянный эпитет вечно юного Манджушри);

viniścaya *m* - решение; *buddh.* обсуждение, толкование (учения);

अथ खलु तस्यां वेलायां मञ्जुश्रीः कुमारभूतः सहस्रपत्रे पद्मे शकटचक्रप्रमाणमात्रे निषण्णोऽनेकबोधिसत्त्वपरिवृतः पुरस्कृतः समुद्रमध्यात् सागरनागराजभवनादभ्युद्गम्य उपरि वैहायसं खगपथेन गृध्रकूटे पर्वते भगवतोऽन्तिकमुपसंक्रान्तः।

śakaṭa *m, n* - повозка; колесница;

puraskṛta (puras-kṛta) - сопровождаемый, почитаемый;

sāgara *nom.pr* - имя царя нагов;

vaihāyasam *adv. buddh.* - в воздух, в воздухе, по воздуху (от skr. vaihāyasa - движущийся по воздуху; *m* небожитель);

upa-saṃ√kram (upasaṃkrāmati P./upasaṃkramate Ā.) - ступать, подходить, переходить; *buddh.* - подходить, приближаться; наступать, нападать;

अथ मञ्जुश्रीः कुमारभूतः पद्मादवतीर्य भगवतः शाक्यमुनेः प्रभूतरत्नस्य च तथागतस्य पादौ शिरसाभिवन्दित्वा येन प्रज्ञाकूटो बोधिसत्त्वस्तेनोपसंक्रान्तः।

उपसंक्रम्य प्रज्ञाकूटेन बोधिसत्त्वेन सार्धं संमुखं संमोदनीं संरञ्जनीं विविधां कथामुपसंगृह्यैकान्ते न्यषीदत्।

saṃmodana *buddh.* - приветственный, содержащий вежливые вопросы о благополучии;

saṃraṅjana *buddh.* - приятный, вежливый, дружеский;

upa-saṅ√grah (употребляется только des. или abs.) - держать, обнимать

ekānta *m* уединенное место; ekānte *adv.* отдельно, одиноко;

अथ खलु प्रज्ञाकूटो बोधिसत्त्वो मञ्जुश्रियं कुमारभूतमेतदवोचत्-

समुद्रमध्यगतेन त्वया मञ्जुश्रीः कियान् सत्त्वधातुर्विनीतः?

sattvadhātu (sattva-dhātu) *m* - большое количество существ;

vi√nī I U. - направлять, обучать, воспитывать, обуздывать;

मञ्जुश्रीराह-अनेकान्यप्रमेयाण्यसंख्येयानि सत्त्वानि विनीतानि।

तावदप्रमेयाण्यसंख्येयानि यावद्वाचा न शक्यं विज्ञापयितुं चित्तेन वा चिन्तयितुम्।

मुहूर्तं तावत् कुलपुत्र आगमयस्व यावत् पूर्वनिमित्तं द्रक्ष्यसि।

pūrvanimitta (pūrva-nimitta) *n buddh.* - знак будущего успеха, признак продвижения вперед; предзнаменование событий (таких, как рождение будд и бодхисаттв);

समनन्तरभाषिता चेयं मञ्जुश्रिया कुमारभूतेन वाक्,

samanantara - тесно примыкающий; Acc.sg.adv. непосредственно за к.-л.;

तस्यां वेलायामनेकानि पद्मसहस्राणि समुद्रमध्यादभ्युद्गतानि उपरि वैहायसम्।

तेषु च पद्मेष्वनेकानि बोधिसत्त्वसहस्राणि संनिषण्णानि।

अथ ते बोधिसत्त्वास्तेनैव खगपथेन येन गृध्रकूटः पर्वतस्तेनोपसंक्रान्ताः।

उपसंक्रम्य ततश्चोपरि वैहायसं स्थिताः संदृश्यन्ते स्म।

सर्वे च ते मञ्जुश्रिया कुमारभूतेन विनीता अनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ।

तत्र ये बोधिसत्त्वा महायानसंप्रस्थिताः पूर्वमभूवन्,

ते महायानगुणान् षट् पारमिताः संवर्णयन्ति।

pāramitā *f* - переход на другой берег, совершенное достижение, совершенная добродетель, совершенство в ч.-л. (шесть парамит: dāna, śilā, kṣanti, vīrya, dhyāna, prajñā);

saṃ√varṇ X P. - рассказывать, одобрять; хвалить, восхвалять;

ये श्रावकपूर्वा बोधिसत्त्वास्ते श्रावकयानमेव संवर्णयन्ति।

śrāvaka *buddh. m* - ученик, последователь Будды; в махаянских текстах так часто назвывали последователей Тхеравады;

सर्वे च ते सर्वधर्मान् शून्यानिति संजानन्ति स्म, महायानगूणांश्च।

अथ खलु मञ्जुश्रीः कुमारभूतः प्रज्ञाकूटं बोधिसत्त्वमेतदवोचत्-

सर्वोऽयं कुलपुत्र मया समुद्रमध्यगतेन सत्त्वविनयः कृतः। स चायं संदृश्यते।

अथ खलु प्रज्ञाकूटो बोधिसत्त्वो मञ्जुश्रियं कुमारभूतं गाथाभिगीतेन परिपृच्छति—

gāthā *f* - песня, стих, метрическая часть буддийской сутры; название стихотворного размера;

महाभद्र प्रज्ञया सूरनामन् असंख्येया ये विनीतास्त्वयाद्य।

sūra *m* - солнце; мудрец, учитель;

सत्त्वा अमी कस्य चायं प्रभावस्तद्ब्रूहि पृष्टो नरदेव त्वमेतत्॥४७॥

prabhāva *m* - мощь, сила, величие;

कं वा धर्मं देशितवानसि त्वं किं वा सूत्रं बोधिमार्गोपदेशम्।

यच्छ्रुत्वामी बोधये जातचित्ताः सर्वज्ञत्वे निश्चितं लब्धगाधाः॥४८॥

citta *n* мысль; ум, разум, сознание, мышление; дух, душа; воля; сердце;

niścitam *adv.* - точно, конечно, определенно;

gādha *m, n* - мель, брод;

मञ्जुश्रीराह-समुद्रमध्ये सद्धर्मपुण्डरीकं सूत्रं भाषितवान्, न चान्यत्।

प्रज्ञाकूट आह-इदं सूत्रं गम्भीरं सूक्ष्मं दुर्दृशम्, न चानेन सूत्रेण किंचिदन्यत् सूत्रं सममस्ति।

अस्ति कश्चित् सत्त्वो य इदं सूत्ररत्नं सत्कुर्यादवबोद्धुमनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबोद्धुम्?

sat√kar VIII U. - почитать, относиться с уважением; украшать;

मञ्जुश्रीराह-अस्ति कुलपुत्र सागरस्य नागराज्ञो दुहिता अष्टवर्षा जात्या महाप्रज्ञा तीक्ष्णेन्द्रिया

tīkṣṇendriya (tīkṣṇa-indriya) - чьи чувства остры или проницательны;

ज्ञानपूर्वंगमेन कायवाङ्मनस्कर्मणा समन्वागता सर्वतथागतभाषितव्यञ्जनार्थोद्ग्रहणे धारणीप्रतिलब्धा

pūrvaṃgama (pūrvaṃ-gama) *buddh.* - первый, предшествующий;

vyañjana *n buddh.* - звук;

udgrahaṇa *n buddh.* - понимание, восприятие;

dhāraṇī *f buddh.*- магическая формула, мантра; удержание, поддержка;

सर्वधर्मसत्त्वसमाधानसमाधिसहस्रैकक्षणप्रतिलाभिनी।

samādhi *m* - глубокое сосредоточение, самадхи (заключительная ступень глубокой медитации); внимательность, приведение в исполнение, религиозное подвижничество, благоговение,благочестие,

samādhāna *n* - соединение, приведение в порядок; *buddh.* ответ; сосредоточение ума или внимания;

dharma *m* – положение, состояние, правило, закон, законность, долг, обязанность, религия, нравственное достоинство, благочестие, праведность, добродетель; *buddh.* элементарная единица психики субъекта, носитель одного качества; характерная черта, свойство, качество; идея;

बोधिचित्ताविनिवर्तिनी विस्तीर्णप्रणिधाना सर्वसत्त्वेष्वात्मप्रेमानुगता गुणोत्पादने च समर्था न च तेभ्यः परिहीयते।

bodhicitta *n buddh.* - мысль о просветлении;
vi-ni√vart I Ā. - возвращаться, поворачивать назад;
vistīrṇa (p.p. от vi√star) - распространенный, большой, великий, многочисленный;
praṇidhāna *n buddh.* - устремление, сильное желание;
samartha - способный, годный;

स्मितमुखी परमया शुभवर्णपुष्कलतया समन्वागता मैत्रचित्ता करुणां च वाचं भाषते।

varṇa *m* - цвет, окраска; облик, внешний вид; варна, каста;
puṣkalatā *f buddh.* - совершенство;

सा सम्यक्संबोधिमभिसंबोद्धुं समर्था।

प्रज्ञाकूटो बोधिसत्त्व आह-दृष्टो मया भगवान् शाक्यमुनिस्तथागतो बोधाय घटमानो बोधिसत्त्वभूतोऽनेकानि पुण्यानि कृतवान्।

√ghaṭ I Ā. - быть занятым ч.-л., стараться, стремиться;

अनेकानि च कल्पसहस्राणि न कदाचिद् वीर्यं स्रंसितवान्।

√sraṅs (I Ā. p.p. srasta) - падать, ослабевать, тонуть;

त्रिसाहस्रमहासाहस्रायां लोकधातौ नास्ति कश्चिदन्तशः सर्षपमात्रोऽपि पृथिवीप्रदेशः यत्रानेन शरीरं न निक्षिप्तं सत्त्वहितहेतोः।

antaśas *adv. buddh.* - так много, что;
sarṣapa *m* - горчица, зерно горчицы;

पश्चाद् बोधिमभिसंबुद्धः । क एवं श्रद्दध्यात्, यदनया शक्यं मुहूर्तेन अनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबोद्धुम्?

अथ खलु तस्यां वेलायां सागरनागराजदुहिता अग्रतः स्थिता संदृश्यते स्म।

सा भगवतः पादौ शिरसाभिवन्द्य एकान्तेऽस्थात्। तस्यां वेलायामिमा गाथा अभाषत—

पुण्यं पुण्यं गम्भीरं च दिशः स्फुरति सर्वशः।

√sphur I P. *buddh.* - наполнять; распространять;

सूक्ष्मं शरीरं द्वात्रिंशल्लक्षणैः समलंकृतम्॥४९॥

अनुव्यञ्जनयुक्तं च सर्वसत्त्वनमस्कृतम्।

anuvyañjana *n* - малый, вторичный признак (обычно это 80 вторичных признаков великого человека);

सर्वसत्त्वाभिगम्यं च अन्तरापणवद्यथा॥५०॥

āpaṇa *m* - рынок;

यथेच्छया मे संबोधिः साक्षी मेऽत्र तथागतः।

विस्तीर्णं देशयिष्यामि धर्मं दुःखप्रमोचनम्॥५१॥

√deśaya *buddh.* - учить, сообщать; показывать;

अथ खलु तस्यां वेलायामायुष्मान् शारिपुत्रस्तां सागरनागराजदुहितरमेतदवोचत्-

केवलं कुलपुत्रि बोधाय चित्तमुत्पन्नम्। अविवर्त्याप्रमेयप्रज्ञा चासि।

avivartya *buddh.* - не поворачивающий назад (с пути просветления);

सम्यक्संबुद्धत्वं तु दुर्लभम्।

अस्ति कुलपुत्रि स्त्री न च वीर्यं स्रंसयति,

अनेकानि च कल्पशतान्यनेकानि च कल्पसहस्राणि पुण्यानि करोति,

षट् पारमिताः परिपूरयति, न चाद्यापि बुद्धत्वं प्राप्नोति। किं कारणम्?

पञ्च स्थानानि स्त्री अद्यापि न प्राप्नोति। कतमानि पञ्च?

प्रथमं ब्रह्मस्थानं द्वितीयं शक्रस्थानं तृतीयं महाराजस्थानं चतुर्थं चक्रवर्तिस्थानं पञ्चममवैवर्तिकबोधिसत्त्वस्थानम्॥

cakravartin *m* - (*букв.* поворачивающий колесо) верховный царь, совершенный правитель;
avaivartika *buddh.* - не поворачивающий назад (с пути просветления);

अथ खलु तस्यां वेलायां सागरनागराजदुहितुरेको मणिरस्ति,

यः कृत्स्नां त्रिसाहस्रां महासाहस्रां लोकधातुं मूल्यं क्षमते।

dhātu *m, f* - элемент, составная часть; *buddh.* психо-физические составные элементы личности; мощи, реликвия; мир, вид существования; большое количество;
mūlya - основной; *n* цена, ценность, достояние;
√kṣam I U. *buddh.* - быть достойным, быть заслуживающим, иметь (определенную) цену;

स च मणिस्तया सागरनागराजदुहित्रा भगवते दत्तः।

स भगवता च अनुकम्पामुपादाय प्रतिगृहीतः।

anukampā *f* - сочувствие, сострадание;

अथ सागरनागराजदुहिता प्रज्ञाकूटं बोधिसत्त्वं स्थविरं च शारिपुत्रमेतदवोचत्-

sthavira - старый, важный, знатный, почтенный, уважаемый;

योऽयं मणिर्मया भगवतो दत्तः, स च भगवता शीघ्रं प्रतिगृहीतो वेति?

स्थविर आह-त्वया च शीघ्रं दत्तो भगवता च शीघ्रं प्रतिगृहीतः।

सागरनागराजदुहिता आह-यद्यहं भदन्त शारिपुत्र महर्द्धिकी स्याम्,

bhadanta *buddh.* - уважаемый, почтенный (при обращении к монахам);
maharddhika *buddh.* - обладающий большой магической силой;

शीघ्रतरं सम्यक्संबोधिमभिसंबुध्येयम्।

न चास्य मणेः प्रतिग्राहकः स्यात्॥

अथ तस्यां वेलायां सागरनागराजदुहिता सर्वलोकप्रत्यक्षं स्थविरस्य च शारिपुत्रस्य प्रत्यक्षं तत् स्त्रीन्द्रियमन्तर्हितं पुरुषेन्द्रियं च प्रादुर्भूतं बोधिसत्त्वभूतं चात्मानं संदर्शयति।

indriya *n* - сила, власть; чувство; орган чувства; *buddh.*- пять способностей, соответствующие пяти силам (bala);
antar-√dhā III U. (p.p. antarhita) прятать; *pass.* прятаться, исчезать;
prādur √bhū I P. стать видимым, появиться, возникать;

तस्यां वेलायां दक्षिणां दिशं प्रक्रान्तः। अथ दक्षिणस्यां दिशि विमला नाम लोकधातुः।

तत्र सप्तरत्नमये बोधिवृक्षमूले निषण्णमभिसंबुद्धमात्मानं संदर्शयति स्म,

द्वात्रिंशल्लक्षणधरं सर्वानुव्यञ्जनरूपं प्रभया च दशदिशं स्फुरित्वा धर्मदेशनां कुर्वाणम्।

ये च सहायां लोकधातौ सत्त्वाः, ते सर्वे तं तथागतं पश्यन्ति स्म,

saha *m*, sahā *f* - Земля, название нашей вселенной;

सर्वैश्च देवनागयक्षगन्धर्वासुरगरुडकिन्नरमनुष्यामनुष्यैर्नमस्यमानं धर्मदेशनां च कुर्वन्तम्।

ये च सत्त्वास्तस्य तथागतस्य धर्मदेशनां शृण्वन्ति,

सर्वे तेऽविनिवर्तनीया भवन्त्यनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ।

सा च विमला लोकधातुः, इयं च सहा लोकधातुः षड्विकारं प्राकम्पत्।

ṣaḍvikāram (ṣaḍ-vikāram) *adv.* - шестью необычными способами;

भगवतश्च शाक्यमुनेः पर्षन्मण्डलानां त्रयाणां प्राणिसहस्राणामनुत्पत्तिकधर्मक्षान्तिप्रतिलाभोऽभूत्।

parṣad - окружающий; *f* - народ, совет, собрание;
maṇḍala *n* - круг, (солнечный) диск, округ;
anutpattika - (еще) не возникший;
kṣānti *f* - терпение, терпимость; *buddh.* умственная восприимчивость, готовность воспринять учение

त्रयाणां च प्राणिशतसहस्राणामनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ व्याकरणप्रतिलाभोऽभूत्।

vyākaraṇa *n* - различие, анализ, грамматика; *buddh.* объяснение, разъяснение; предсказание;

अथ प्रज्ञाकूटो बोधिसत्त्वो महासत्त्वः स्थविरश्च शारिपुत्रस्तूष्णीमभूताम्॥

इत्यार्यसद्धर्मपुण्डरीके धर्मपर्याये स्तूपसंदर्शनपरिवर्तो नामैकादशमः॥